The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com

ग्वालियर घराने की विशेषतायें

शिवा वर्मा

शोधार्थी पी0 एच0 डी0

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

सारांश-

उत्तर भारतीय संगीत को वैभवता के शिखर पर पहुंचाने में ग्वालियर घराना अति प्राचीन, कार्यक्षम तथा असाधारण कहा जाता है। ग्वालियर घराना सब घरानों की गंगोत्री माना जाता है। ख्याल शैली को लोकप्रिय बनाकर उसका व्यापक प्रचार एवं प्रसार करने में जिस घराने की गायकी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है ग्वालियर घराने की गायकी की विशेषतायें निम्नानुसार हैं। ग्वालियर घराने में परम्परागत नायकी, ध्रुपद अंग प्रधान गायकी, सीधी, जोरदार, सपाट तान गुलाई तान प्रचलित राग गाने का विशेष चलन , तानों में ड़बल स्वरों का प्रयोग ,राग की शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

Keywords- *ग्वालियर घराना , परम्परागत नायकी*

उत्तर भारतीय संगीत में ख्याल गायन शैली में ग्वालियर घराना सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। उत्तर भारतीय संगीत को वैभवता के शिखर पर पहुंचाने में ग्वालियर घराना अति प्राचीन, कार्यक्षम तथा असाधारण कहा जाता है। ग्वालियर घराना सब घरानों की गंगोत्री माना जाता है। ख्याल शैली को लोकप्रिय बनाकर उसका व्यापक प्रचार एवं प्रसार करने में जिस घराने की गायकी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है उसमें ग्वालियर घराने की गायकी सर्वाधिक प्रमाणित, शक्तिशाली, प्रभावशाली, संयमशील एवं सर्वांगपूर्ण मानी जाती है। ग्वालियर की

गायकी, गम्भीर, ड़ोलदार और दरबारी सवारी की भांति, धीर व भव्य होती है। ग्वालियर घराने की गायकी की विशेषतायें निम्नानुसार हैं।

1. तीनों सप्तक के लिए स्वर साधना द्वारा आवाज को तैयार करना–

''ग्वालियर घराने के छात्र–छात्राओं को प्रारम्भ से ही एक विशेष प्रकार की स्वर साधना कराई जाती है। जिसमें कंठ को तीनों सप्तक के लिए विशेष तैयार किया जा सके।

2. प्रचलित रागों का विशेष चलन–

ग्वालियर घराने में प्रचलित राग गाने का विशेष चलन है। ग्वालियर घराने में गायक प्रचलित राग ही ज्यादातर गाना पसन्द करते हैं। इसका अर्थ यह बिल्कुल भी नही कि ग्वालियर के गायकों को अप्रचलित राग गाना नही आता। बल्कि ग्वालियर घराने के गायकों को प्रचलित राग गाने का विशेष कारण श्रोतागण होते हैं क्योंकि श्रोतागणों को प्रचलित रागों के बारे में अधिक जानकारी होने के कारण श्रोताओं में रूचि बनी रहती है। प्रचलित रागों को गाने का विशेष कारण यह है कि गायक किस ढ़ंग से उस राग को प्रस्तुत करता है व भिन्न–भिन्न प्रकार की स्वर लहरियों द्वारा राग को सजाता है। इससे श्रोता गायक के गान मे रस ग्रहण कर सकते हैं।

3. परम्परागत नायकी (स्थाई अन्तरा) के गायक उसी के अंगभुत गायकी–

भारत वर्ष में वेद पढ़ाने की परम्परा हजारों वर्षों से चली आ रही है। वैदिकों द्वारा वेद पढ़ाने में कभी भी किसी भी समय उच्चारण में अन्तर दिखाई नहीं देता है। इसी परम्परा को संघा कहा जाता है। इसी संघा के नियम पर वेदिकों ने अपनी परम्परा अभी तक स्थिर रखी है। ख्याल गायन क्षेत्र में ग्वालियर घराने की भूमि एसी ही मानी जाती है। ग्वालियर की परम्परागत नायकी (स्थाई अन्तरा) का स्वरूप भी एक साये के समक्ष है। ग्वालियर परम्परा का कोई भी गायक किसी भी समय अनेकों बार भी गाये तो बंदिश की गुरूमुख तालिम में अन्तर दिखाई नहीं देता। प्रत्येक रागों का अलग स्वरूपों की ओर अंगों की बंदिशों की सुरक्षा व याद्दाश्त वेद ग्रंथों की सुरक्षा के समान ग्वालियर घराने के गायक दृढ़ निश्चय से आज तक सुरक्षित हुए हैं।

4. ख्याल में ध्रुपद अंग की प्रधानता

ग्वालियर घराने की गायकी ध्रुपद अंग प्रधान गायकी मानी जाती है। ख्याल की उत्पत्ति ध्रुपद अंग से ही हुई। आवाज लगाने का सही ढ़ंग, शब्दोच्चारण, गमक व मींड़, ताल पक्ष, अविरल में सुगंठित बंदिशों का प्रयोग राग की शुद्धता, स्थाई अन्तरों का भराव, आलाप में बहलावों का अधिक प्रयोग, लयकारियों का प्रयोग, इन सब आवश्यक तत्वों का समावेश हो उसे ध्रुपद अंग का ख्याल कहा जाता है।

5. तानों में विशेष प्रकार

हिन्दुस्तानी संगीत में तान शब्द का प्रयोग बहुत ही प्राचीन काल से होता आ रहा है। तानसेन रचित संगीतसार में शुद्ध तान कूटतान का उल्लेख है।

सपाट तान– किसी राग में क्रमानुसार सीधी व जोरदार तान को सपाट तान कहते है। जिसे ग्वालियर घराने में सरल अथवा ढ़ीली तान भी कहा जाता है। ग्वालियर घराने में सपाट तान लेने के दो प्रकार माने जाते हैं– एक बड़ा व दूसरो छोटा। सपाट ताल में बड़े प्रकार में सरल सपाट तान में पहला स्वर समूह मन्द षडज से तार षडज तक ओर फिर क्रमशः उसको तार सप्तक के रिषभ से गंधार, मध्यम पंचम से जोड़ते हुए आरोह के बाद अवरोह लेते हैं।

डबल स्वरों का ताने में प्रयोग– ग्वालियर घराने की परम्परा में तानों में ड़बल स्वरों का प्रयोग बहुत अधिक होता है। सपाट तान वक्र जाति के रागों में तथा ओड़व जाति के रागों में राग के नियमों के अनुसार राग के धर्म को रखना कठिन होता है। ऐसे में ड़बल स्वरों का प्रयोग राग को स्पष्ट करने में अधिक उपयुक्त होता है। जहाँ से तान को वापस होना होता है वह स्वर डबल बार लिया जाता है। इस स्वर उच्चारण पर ही सरल सपाट तान की बैलेन्स निर्धारित होता है।

डबल स्वर का प्रयोग दो प्रकार से किया जाता है– लोटकर समाप्त होती है, तब वह षड़ज भी डबल होता है। ताकि उस स्वर की स्थिरता दिखे क्योंकि यही स्वर मूल स्वर होता है। उदाहरणार्थ–

सा ग म ध नि सां गं मं मं गं सां नि ध म ग सा सा

2. जब किसी राग में कोई स्वर नही लगता तब उसकी पूर्ति करने के लिए डबल स्वर का प्रयोग किया जाता है। जैसे राग भूपाली में म और नि वर्जित स्वर है तो म स्वर की पूर्ति हेतु षड़ज को दो बार लिया जाता है। उदाहरणार्थ–

सा रे ग प ध सां सां ध प ग रे सा सा (राग भूपाली)

जोरदार तानें–

सरल तान में जोरदार तान का कुछ क्रम रहता है। वह न्यासपूर्ण स्वरों से लगभग होता है। उदाहरण के लिए राग यमन लेते हैं। इस राग में गंधार, पंचम, निषाद, षड़ज ग प नि सां में स्वर न्यास स्वर है। इस स्वरों की तानें क्रमवार जोशबद्ध तानों की रचना करती हैं। ऐसी तानों में अन्तिम स्वर डबल प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त बीच के आने वाले स्वर उदाहरणार्थ रे मे ध इन स्वरों की तानें सरल तानें होते हुए भी इसका समावेश गुलाई की तानों में होता है।

गुलाई की तान–

गुलाई की तानों में जिस स्वर से तान वापस आती है उस स्वर को ड़बल न लेते हुए सीधे षड़ज पर समाप्त करते हैं। गुलाई की तानों में ड़बल स्वर का प्रयोग नही होता इसलिए इन्हें ग्वालियर गायकी में गुलाई

की ताल कहा जाता है। इसका मुख्य लक्षण वह तान जो आसानी से ली जा सके, गुलाई की तानें अवरोहात्मक होती हैं।

फिरत की तान–

फिरत की तानें राग के किसी विशेष स्वर को केन्द्र मानकर ली जाती है। इसमें स्वर के दोनों क्रम आरोही व अवरोही रहते हैं। फिरत की तान में मध्य षडज बीच में कहीं–कहीं नही आता है।

फिरत की तान उदाहरण राग यमन–

नि़ रे ग मे ध प, मे ध प, मे ध नि ध प, मे ध नि रें, सां नि ध प, मे ध नि रें गं रें सां नि ध प, मे ध नि रें गं में गं रें सां नि ध प, मे ध नि रें गं में पं में गं रे सां नि ध प, मे ध प मे ग रे सा

ग्वालियर घराने की गायकी में उपयुक्त तरीके से ही प्रत्येक राग में फिरत की तानों का प्रयोग अत्यन्त कुशलतापूर्वक किया जाता है।

जबड़े की तान–

जबड़े की तान ग्वालियर घराने की गायकी की एक विशेष पहचान है। तान क्रिया में जबड़े को हिलाकर वजनी ओर भारी ध्वनि करते हुये जिह्वा के प्रयोग से स्वरों को अलग–अलग अर्थात् स्वर दाना स्पष्ट करने को जबडे की तान अथवा जबड़ा तान कहा जाता है। जबड़ा तान में आकार के साथ साथ ग म ध अक्षर का प्रयोग भी किया जाता है। उदाहरण–

प मे ग रे नि़ रे सा

य य य य गं गं ग

नि ध प मे ग रे सा

ग ग ग य य य य

ग्वालियर के गायक जबड़े की तान को कुशलतापूर्वक प्रस्तुत कर श्रोताओं को आश्चर्यचकित कर देते हैं।

गमक तानें–

ग्वालियर की गायकी पर ध्रुपद शैली का अत्यन्त गहरा प्रभाव है। ग्वालियर गायकी में गमकयुक्त तानें बहुत अधिक प्रयोग में ली जाती है। ग्वालियर गायकी गम्भीर एवं जोरदार गायकी कही जाती है।

ग्वालियर घराने की गायकी की कुछ विशेष गमक नियमानुसार है–

सा रे सा सा, रे रे सा सा, नि़ सा रे रे सा नि़ रे रे सा नि़ सा, सा रे रे सा नि़ ध ध प म प ग म रे रे सा सा।

''गमक का प्रयोग और घरानों में भी होता है परन्तु जितना अधिक गमक का प्रयोग ग्वालियर घराने में होता है उतना किसी ओर घराने में नही होता।

गिटकिरी तान–

जब कोई तान किसी राग में तार सप्तक के किसी स्वर से प्रारम्भ होकर अवरोही क्रमबद्ध स्वर समूह के द्वारा अतिद्रुत गति में ली जाती है। उस तान को गिटकिरी तान कहते है। गिटकिरी तान में जहाँ पर ड़बल स्वरों का प्रयोग होता है वहाँ दूसरे स्वर में नीचे वाले स्वर का कण दिया जाता है।

मट्टीतान–

मट्टीतान ग्वालियर घराने की गायकी का एक वैशिष्ट है। ग्वालियर घराने की परम्परा के गायक इस तान को अत्यधिक तैयारी व कुशलतापूर्वक लेते हैं कि श्रोता का हृदय प्रसन्न हो जाता है।

टपतान–

टपतान का प्रयोग ग्वालियर घराने में टप ख्याल शैली में किया जाता है। टपतान में सूक्ष्म स्वंरातरों के कण का प्रयोग किया जाता है। इन तानों को अत्यधिक रियाज द्वारा अत्यन्त सावधानीपूर्वक तैयार करते हैं

रागांग तान–

राग के प्रमुख स्वर समूह से युक्त तान को रागांग तान कहते है। रागांग तान में राग के स्वरूप को स्पष्ट दर्शाने वाले स्वर समूह को बार–बार प्रयोग करते है। तानों का यह प्रकार मुख्य तार सप्तक से आरम्भ होकर मध्य सप्तक के षड़ज पर आकर समाप्त किया जाता है।

ग्वालियर गायकी में रागांग तान स्वतंत्र रूप से गायी जाती है। इस प्रकार की तानों से राग का सम्पूर्ण दर्शन हो जाता है और उसमें राग के नियमों का शास्त्र के अनुसार विशेष पालन किया जाता है।

बोलतानों की लयकारी–

भारतीय संगीत में बंदिशों के पद को बोल कहते है। बंदिशों के बोल को तानों में लेने को बोलतान कहते हैं तथा इन बोलतानों को भिन्न–भिन्न लय में गाने को बोलतान कहते हैं। बोलतान लेते समय कुछ विशेष बातों का ध्यान रखा जाता है। वह निम्न प्रकार से हैं–

6. साधारण विलम्बित लय का प्रयोग–

ग्वालियर गायकी में ख्याल गायन में अति विलम्बित लय के प्रायः साधारण लय का प्रयोग अधिक प्रयोग करते हैं।

भरतमुनि का कथन ''कालान्तरकृत से लयो नाम सज्ञितः अर्थात् काल या समय के अन्तराल को लय कहते है।

7. राग की शुद्धता पर विशेष ध्यान–

ग्वालियर घराने में राग की शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता है इस घराने में अनिवार्यता विशेष यह है कि स्वरों का सही लगाव और सुरीलापन रखते हुए काम किया जाता है। आधा जीवन भौतिक राग–रागिनियों के साथ घोर, तपस्या करने में व्यतीत होता है तब कदाचित, संकीर्ण एवं अप्रचलित रागों पर ध्यान दिया जाता है। राग की शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। गायकी जटिल होते हुए भी राग की शुद्धता नष्ट न हो पाये इस और विशेष ध्यान रहता है।

8. टप्पे अंग के ख्याल–

''टप्पे ख्याल में ख्याल व टप्पे का सुन्दर समन्वय रहता है। टप्पे ख्याल की गायकी टप्पा अंग की पायी जाती है। इसमें छोटी–छोटी मुरकियों का प्रयोग अधिकतर किया जाता है एवं इसकी लय ख्याल समान ही साधारण विलम्बित रखी जाती है।

ग्वालियर घराना ख्याल गायकी नहीं अपितु ध्रुपद धमार, तराना ठुमरी व टप्पा अंग के लिए भी उल्लेखनीय है।

9. अष्टांग पद्धति की गायकी–

ग्वालियर घराने की गायकी अष्टांग पद्धति की है। ''राग विस्तार में ख्याल गायकी के अष्ट अंगों का प्रयोग किया जाता है। इसलिए इस शैली की गायकी को अष्टांग प्रधान गायकी कहा जाता है। आलाप, बहलावा, बोलतान, बोल आलाप, तान, लयकारी के विभिन्न प्रकार, मीड, गमक तथा मुर्की, खटका में आठ गायकी के अंग अष्टांग गायकी के अन्तर्गत आते हैं। मींड़, गमक तथा बहलाव इस गायकी के प्राण तत्त्व हैं। बहलावे से स्वर विस्तार किया जाता है। इनमें से यदि कोई भी अंग शिथिलः छा जाये तो गायकी विकलांग समझी जाती है।

10. विभिन्न प्रकार की तालों का प्रयोग–

ग्वालियर घराने में ख्याल में विभिन्न तालों का प्रयोग किया जाता है। तिलवाड़ा, झुमरा, एकताल, आचार ताल, तीनताल, झपताल, अध्धा ताल का विशेष प्रयोग किया जाता है।''बंदिशें विभिन्न तालों में लयबद्ध है व इतनी सुन्दर और अद्‌भुत है कि सदियों के बाद भी प्रत्येक दिन नई मालूम होती हैं।

11. मींड का विशेष प्रयोग–

ग्वालियर गायकी में ''गायन के प्रारम्भ होने से अन्त तक एक नैसर्गिक प्रवाह सा रहता है। सदारंग–अदारंग दोनों बीनकर होने के कारण गम तथा मीड़ इस शैली के प्राणतत्व समझते हैं। मींड़ न होगी तो स्थाई अन्तरा हीन है। मींड़ अंतःस्थल को स्पर्श कर जाती है। मीड़ के कारण शब्द अटूट रहकर अधिक सुरीले बनते हैं।

परम्परागत और घरानेदार गायकी का विकास अनुसरण और अनुसरण की पद्धति पर पूर्णतया आधारित होने के कारण घराने के प्रवर्तक तथा अनुयायी शिष्यों की गायन शैली की विशेषताओं का उस घराने की गायकी का वैशिष्ट माना गया है। यही कारण है कि उपरोक्त सभी तत्व आज भी ग्वालियर घराने की शैली को पहचाने के रूप में भारतीय संगीत में अपना विशिष्ट स्थान बनाये हुये हैं।

संदर्भ सूचि

1 . भारतीय संगीत के अमर साधक, पण्डित कृष्णराव शंकर पण्डित जी, पृष्ठ 46
2. ग्वालियर की संगीत परम्परा, डा0 अरूण बांगरे, पृष्ठ 276
3. संगीत तील घराणी, डा0 ना0रू0 मारूलकर पृष्ठ 94
4. भरत नाट्यशास्त्र, अध्याय 31, श्लोक 531
5. ग्वालियर की संगीत परम्परा, डा0 अरूण बांगरे, पृ0 271
6. भारतीय संगीत के महान संगीतकार, पं0 शंकर पण्डित, पृ0 40
7. . भारतीय संगीत के महान साधक, पं0 शंकर पण्डित, लेखक तुषार पण्डित, पृ0 40
8. ग्वालियर की ख्याल गायन शैली, पं0 कृष्णराव पण्डित, कलावार्ता, पृ0 7

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-January-2023/36

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

शिवा वर्मा

for publication of research paper title

ग्वालियर घराने की विशेषतायें

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-04, Month January, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com